को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी। 24.7.2020

सम-सीमांत उपयोगिता

नियम को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाए कि किसी उपभोक्ता के पास 5 रुपये है, जिसे वह वस्तु A तथा B पर खर्च करता है। वह इन दोनों वस्तुओं पर इस तरह से खर्च करेगा कि उनपर किए गए खर्च की अंतिम इकाई से उसे समान संतुष्टि की प्राप्ति हो। इसे नीचे की तालिका से स्पष्ट किया गया है।

मुद्रा की इकाइयाँ	प्राप्त उपयोगिता	
	वस्तु A	वस्तु B
1	10	8
2	9	7
3	7	5
4	6	3
5	4	2
कुल 36	25	

इस तालिका से यह स्पष्ट है कि यदि उपभोक्ता अपनी पूरी आय वस्तु A पर खर्च करे तो उसे कुल 36 के बराबर उपयोगिता प्राप्त होती है तथा यदि वह सिर्फ वस्तु B पर व्यय करे तो उसे कुल 25 के बराबर उपयोगिता मिलती है। लेकिन, यदि वह सम-सीमांत उपयोगिता नियम का सहारा लेता है तथा उसके अनुरूप अपनी आय को खर्च करता है तो उसे अधिकतम

Scanned with CamScanner

संतुष्टि प्राप्त होती है। वह अपनी आय की पहली तथा दूसरी इकाई A पर, तीसरी इकाई B पर, चौथी तथा पाँचवी इकाई A एवं B पर खर्च करे तो उसे इन वस्तुओं पर किए गए व्यय की अंतिम इकाई से समान उपयोगिता प्राप्त होती है। इस स्थिति में उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी — 10+9+8+7+7 = 41। इस तरह, उपभोक्ता अपनी आय की तीन इकाइयाँ वस्तु A पर तथा दो इकाइयाँ वस्तु B पर व्यय करते हुए अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर सकता है।

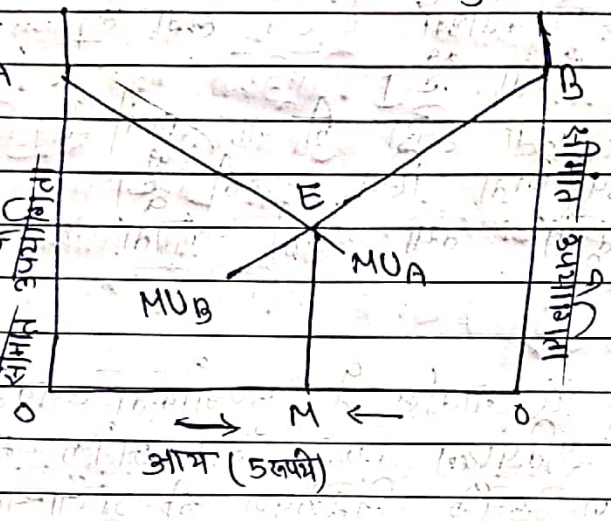

रेखाचित्र से यह स्पष्ट है कि E बिन्दु पर MU of A तथा MU of B दोनों बराबर हैं। उपभोक्ता अपनी आय की OM इकाई A पर तथा O'M इकाई B पर खर्च करेगा तथा इस स्थिति में अधिकतम उपयोगिता हासिल करते हुए अपनी संतुष्टि को अधिकतम करेगा। यदि E बिन्दु के बाएँ या दाएँ किसी बिन्दु पर संतुलन हो तो वहाँ A तथा B की सीमांत उपयोगिता समान नहीं होगी। अतः सिर्फ E बिन्दु पर संतुलन होगा जहाँ MU of A = MU of B है। E बिन्दु पर अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति होगी।

साम्य की स्थिति में वस्तु की सीमांत उपयोगिता तथा उसकी कीमत का अनुपात बराबर होता है। यह स्थिति उपभोक्ता के अधिकतम संतोष की स्थिति का द्योतक होता है। साम्य की स्थिति में

$$\frac{MU\ of\ A}{Price\ of\ A} = \frac{MU\ of\ B}{Price\ of\ A}$$

आदि होता है, क्योंकि इस स्थिति में मुद्रा की सीमांत उपयोगिता अर्थात प्रति रुपये सभी वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता बराबर होती है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में वस्तु का कीमत अनुपात तथा वस्तु की सीमांत उपयोगिता बराबर होते हैं तथा इस स्थिति में उपभोक्ता को अधिकतम-संतुष्टि की प्राप्ति होती है।

Scanned with CamScanner

मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण की मान्यताएँ :—

मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण अनेक मान्यताओं पर आधारित है—

(i) उपभोक्ता की मौद्रिक आय निश्चित होती है।
(ii) उपभोग के दरम्यान उपभोक्ता की आवश्यकताएँ अपरिवर्तित रहती है।
(iii) उपभोक्ता बहुत-से उपभोक्ताओं में एक होता है।
(iv) उपभोक्ता विवेकशील होता है।
(v) उपयोगिता को माप मुद्रा द्वारा की जा सकती है।
(vi) मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर रहती है।
(vii) उपभोक्ता को वस्तुओं तथा उनकी कीमतों का पूर्ण ज्ञान एवं सूचनाएँ होती हैं।

इन मान्यताओं के आधार पर मार्शल ने उपभोक्ता व्यवहार के उपयोगिता विश्लेषण का प्रतिपादन किया है। अनेक मान्यताएँ अवास्तविक हैं, जिसके कारण उनके विश्लेषण की आलोचनाएँ की जाती हैं। कुछ मूलभूत आलोचनाएँ निम्नांकित हैं।

1. उपयोगिता की माप इकाइयों में की जा सकती है :—
इस मान्यता के आधार पर मार्शल ने सिद्धांत की व्याख्या की है। लेकिन, यह मान्यता सही नहीं है। हम उपयोगिता को महसूस कर सकते हैं, इसकी माप इकाइयों में संभव नहीं है।

2. यह मान्यता कि मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर रहती है, गलत है। आय में परिवर्तन से मुद्रा की सीमांत उपयोगिता बदल जाती है। साथ ही, मुद्रा माप का सही माध्यम नहीं हो सकता, क्योंकि मुद्रा का मूल्य स्वयं बदलता रहता है।

3. सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम का निरूपण आत्म-निरीक्षण के आधार पर किया गया है, अतः यह एक मनोवैज्ञानिक नियम है।

4. इस नियम में आय तथा प्रतिस्थापन प्रभाव की व्याख्या नहीं की गई है।

Scanned with CamScanner

5. उपभोक्ता हमेशा विवेकशील ढंग से आचरण नहीं करता। वह परिस्थितियों, रीति-रिवाजों, आदतों आदि से प्रभावित होता है। वह विभिन्न वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता की तुलना किए बिना परिस्थितियों के प्रभाव में आकर वस्तुएँ खरीदता है।

उपभोक्ता व्यवहार के उपयोगिता विश्लेषण की व्याख्या के बाद हमलोगों ने सम-सीमांत उपयोगिता नियम की अलग से व्याख्या प्रस्तुत की है।

Scanned with CamScanner